International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 22-01-2023, Accepted: 06-02-2023, Published: 24-02-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 83-85

मांडलगढ़ परगने के शिलालेखों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

हरि लाल बलाई[1], डॉ. सुमन राठौड़[2]
[1] शोधार्थी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर, राजस्थान, भारत
[2] शोध निर्देशक, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
भारतवर्ष के राज्यो के इतिहास मे मेवाड़ का विशिष्ट स्थान रहा हैं। मेवाड़ अपने अनुपम शौर्य व वीरता के लिए प्रसिद्ध हैं। यहां की भूमि का एक एक कण स्वाभिमानी देशभक्त एवं अपनी मातृभूमि पर अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले वीरों के रक्त से रंजीत हैं। मांडलगढ़ मेवाड़ का सीमावर्ती परगना था इस में खालसा, पट्टायत एवं सांसारिक गांव आते थे। इन गांवो में विभिन्न ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्त्रोत, ताम्रपत्र, शिलालेख आदि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं । यदि इनका अनुसंधान पूर्वक अध्ययन किया जाए तो इतिहास लेखन में आसानी होगी । शिलालेखों ने मेवाड़ राज्य के शासकों उनकी विजयों एवं तात्कालिक राज्य आज्ञाओ की जानकारी दी है। मांडलगढ़ के ऊपरमाल के पठारी अंचल की बावडियों, दरवाजों, मंदिर व छत्तरियों पर विभिन्न लेख अंकित है जो मांडलगढ़ ही नहीं संपूर्ण मेवाड़ के बारे में तथ्यात्मक एवं प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध करवाते हैं। मांडलगढ़ के कई शिलालेख कर्नल जेम्स टॉड अपनी मांडलगढ़ यात्रा के समय यहां से ले गए थे। बहुत से शिलालेखों को समाज कंटको ने धन के लालच में आकर नष्ट कर दिए हैं। फिर भी परगने के गांवो में कई शिलालेख मौजूद हैं जो इस क्षेत्र की ऐतिहासिकता को प्रमाणित करते हैं।

मूल शब्दः परगना, ऊपरमाल, पट्टायत, मंदिर, जलाशय

मेवाड़ के मांडलगढ़ परगने में स्थित प्रमुख शिलालेख निम्न है

1. बावड़ी का शिलालेख

मांडलगढ़ से 20 किलोमीटर दूर राजगढ़ चोहली के मध्य कटारियों का खेड़ा के जंगलों के मध्य एक बावड़ी स्थित है जिसे स्थानीय लोग भणाय की बावड़ी के नाम से जानते हैं । बावड़ी के प्रथम तल पर अरबी भाषा में शिलालेख अंकित हैं जिसमें लिखा है कि ''संपूर्ण संसार में परमेश्वर एक ही है, वह एकमेव हैं, वह किसी से पैदा नहीं हुआ है, ने उससे कोई पैदा हुआ है, मनुष्य को सर्वधर्म सद्भाव का संदेश देने वाला यह शिलालेख एकेश्वरवाद में लोगों की भावना को अंकित करता है।

बावड़ी के प्रथम तल की शिलाखंड पर एक खंडित लेख अंकित हैं जिसमें संवत 1531 लिखा है।[1] शायद यह बावड़ी के निर्माण की तिथि हो सकती हैं लेकिन लोगों द्वारा इस शिलालेख को खुर्द बुर्द कर दिया गया है ।

(बावड़ी का शिलालेख)

2. मांडलगढ़ के किले के दरवाजे का शिलालेख

यह शिलालेख मांडलगढ़ दुर्ग के पंचम दरवाजे पर अंकित हैं। शिलालेख में मांडलगढ़ परगने में बली निषेध की आज्ञा जारी की गई हैं। इसमें मेवाड़ महाराणा भीमसिंह ने 1796 ई. में मांडलगढ़ दुर्ग के किलेदार मेहता देवीचंद को बली निषेध की आज्ञा का पालन संपूर्ण क्षेत्र में करवाने के बारे में लिखा है। किले के ऊपर ''सहती जी माता'' व जैन स्थानक के आसपास किसी भी जीव की बलि नहीं दी जाएगी। इस लेख में मांडलगढ़ के पंच पटेलों द्वारा श्री दरबार में जीव हत्या को रोकने की प्रार्थना करने एवं दुर्ग में देवालय बनाने की स्वीकृति देने की आज्ञा के बारे में लिखा है।

किले के पास वाली पहाड़ी पर स्थित बिजासण माता मंदिर में बकरा, भैंसा और शराब चढ़ाकर पूजा अर्चना की जाती थी। महाराणा ने इस पशु बलि को निषेध करके माता रानी को स्नान करा कर उजला करने तथा अब से निरामिष पूजा की आज्ञा जारी की हैं। महाराणा नें बिजासण माता के देवालय में श्रीरामचंद्र जी, श्रीमहालक्ष्मी जी, श्रीगणेश जी, और श्री हनुमान जी की प्रतिमाएं स्थापित करवाई। महाराणा द्वारा जारी की गई उक्त बली निषेधाज्ञा का यदि कोई व्यक्ति उल्लंघन करेगा तो उसे श्री एकलिंग जी की सौगंध होगीं।[2] फिर भी कोई हिंदू या मुस्लिम व्यक्ति गलती करता है तो उसे नर्क में जगह मिलेगी। यह शिलालेख मेवाड़ में संभवतया जीव हत्या निषेध का पहला शिलालेख हैं इसमें बली को प्रतिबंधित किया गया है । और लोगों को शपथ दिलाकर पशु हत्या नहीं करने को प्रोत्साहित किया हैं।

3. मांडलगढ़ की तलहटी का शिलालेख

मांडलगढ़ की तलहटी में मेहता जी मंदिर के बाहर यह शिलालेख अंकित हैं यह लेख मेवाड़ महाराणा जगतसिंह द्वितीय ने 1745ई. में लिखवाया था। 18वीं शताब्दी में मांडलगढ़ परगने के कई गांव के लोग मराठों, पिंडारी, व मुगलों के आक्रमणों से परेशान होकर पलायन करके अन्यत्र चले गए थे । परगने के जगीरी गाँवों में भी महाराणा द्वारा जागीरदार परिवर्तित करने से कृषक वर्ग का शोषण होने लगा था क्योंकि नवीन जागीरदार अधिक धन के लालच में किसान पर बहुत सारे कर लगाते थे। जिससे कृषक अपने परिवार का भरण पोषण नहीं कर पाते थे। जिससे वह ऐसी विकट परिस्थितियों में मांडलगढ़ से पलायन कर जाते थे। जिससे गांव के गांव उजडने लगे थे । मेवाड़ में खेती नहीं होने

से राजस्व आय नहीं होती थी। जिससे राजकोषीय हानि होने लगी। महाराणा जगतसिंह द्वितीय ने मांडलगढ़ के किलेदार मेहता देवीचंद को आदेश दिया कि लोगों को किसी भी प्रकार से पलायन करने से रोका जाए। [3]

जो व्यक्ति पलायन करके अन्यत्र चले गए हैं । उन्हें भी पुनः परगने में लाकर बसाया जाए। जो कृषक कर देने में समर्थ हो उससे ही कर वसूल किया जाए। उन्हें किसी भी प्रकार का दंड नहीं दिया जाए। इतना ही नहीं महाराणा ने कृषकों को अपनी आमदनी में वृद्धि करने के लिए प्रोत्साहित करने की अपील की । साथ ही कृषक वर्ग को भी हिदायत दी गई कि कोई भी किसान अन्य किसान की भूमि पर अतिक्रमण नहीं करेगा। यदि मांडलगढ़ का कोई भी व्यक्ति उक्त आदेश की अवहेलना करेगा तो उन्हें सूर्य – चंद्रमा की सौगंध होगी। फिर भी कोई व्यक्ति नहीं मानता है तो वह नरक में जायेगा।

4. गणेशपोल का शिलालेख

इस शिलालेख में मेवाड़ महाराणा भीम सिंह द्वारा मांडलगढ़ की तलहटी में स्थित जालेश्वर तालाब में मत्स्य आखेट पर प्रतिबंध की आज्ञा अंकित करवाई गई हैं। महाराणा ने 1795ई में रक्षाबंधन के दिन से ही जालेश्वर तालाब में किसी भी प्रकार की जीव हत्या करने, गंदगी फैलाने, शौच आदि करने पर पूर्ण पाबंदी लगा दी थी।[4] इस कार्य को सफल बनाने के लिए मेहता देवीचंद को आदेश दिया कि यदि कोई व्यक्ति जलाशय में मत्स्य आखेट करता है एवं गंदगी फैलाता है तो उसे राजद्रोह के समान दंड दिया जाए। साथ ही लेख में इस तालाब के पानी से पेयजल के अलावा सिंचाई पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया था।

5. मेनाल का शिलालेख

मेनाल का मूल शिलालेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैंड ले जाया गया हैं। कर्नल जेम्स टॉड ने मूल शिलालेख को अपनी पुस्तक एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ़ राजस्थान में लिखा था की कुलदेवी आशापूर्णा के आशीर्वाद से चौहानों को गुप्त खजाना मिला था। कुलदेवी की शक्ति से चौहान पृथ्वी पर शासन करने में सक्षम हुए। इस धन की सहायता से भानवर्धन चौहान ने युद्ध में विजय प्राप्त की थी । हाडा वंश की उत्पत्ति इन्हीं भानवर्धन से हुयी। इसी वंश में कुलन नामक प्रतापी नरेश हुए, जिनका प्रताप निर्मल चन्द्रिका के समान प्रकाशित हुआ।यह राजा दंडवत करते हुए केदारनाथ गये थे । इनके पिता राजा रैनसी थे जिन्होंने कई युद्ध में विजय प्राप्त की। कुलन के पुत्र जयपाल ने अनेक धार्मिक कार्य किये । इन के प्रशासनिक कार्यो से प्रजा खुश थी। राज्य में आमदानी भी खूब होती थी। जयपाल के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र देवराज चौहान शासक बने जिन्होंने सभी की मनोकामना पूर्ण की तथा सदैव मनुष्य को प्रसन्न करने का प्रयास किया। इन्हें नृत्य और गायन का शौक था। देवराज के पुत्र हरराज ने अनेक राजाओ को युद्ध में पराजित किया एवम उनके किलो को नष्ट किया एवम बंदी बनाकर अपनी राजधानी लाये। हरराज के बारह पुत्र थे इनके ज्येष्ठ पुत्र आलू हाडा ने बम्बवदा पर अधिकार करके अपना नवीन राज्य स्थापित किया।[5]

आलू हाडा के वंशजो ने अनेक वर्षो तक बम्बवदा को राजधानी बनाकर सम्पूर्ण उपरमल क्षेत्र पर शासन किया। इसके बाद बम्बवदा के शासको का उल्लेख नही मिलता है। हरराज के पुत्र रीतपाल ने अनेक विद्रोहियों का दमन किया । रीतपाल के ज्येष्ठ पुत्र कुंतल ने अपने पराक्रम से कई राजाओ को युद्ध में पराजित किया था कुंतल के छोटे भाई दीदा ने धर्मराज की उपाधि प्राप्त की थी ।इनकी धार्मिक कार्यो में रूचि अधिक थी इनकी पत्नी राजलदेवी से समुद्र के पुत्र चन्द्र के समान एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम महादेव रखा गया। वह युद्ध भूमि में सुमेरु के समान अचल रहता था एवं दान देने में इन्द्र के कल्पवृक्ष के सदृश था। उसने अपने शत्रुओं के रक्त को घोड़े के खुरों के द्वारा उड़ाये गये धूल से ढक दिया। उसकी तलवार की चमक से शत्रुओं की आँखे चौंधिया जाती थी। उसने अपने सेन्य बल व तलवार की ताकत से अमीशाह को पराजित और मेड़पत के राजा को मुक्त करके उसकी पकड़ से कैता को उसी प्रकार मुक्त कर लिया जैसे पौराणिक कथाओं में राहु की पकड़ से चन्द्र को मुक्त कराया गया था। उनका यश सर्वत्र प्रसारित था । उनका एक पुत्र दुर्जन जिसे उन्होंने जीवराज की उपाधि प्रदान की। जीवराज के दो भाई थे, सुबुतसाल और कुम्भकर्ण । [6]

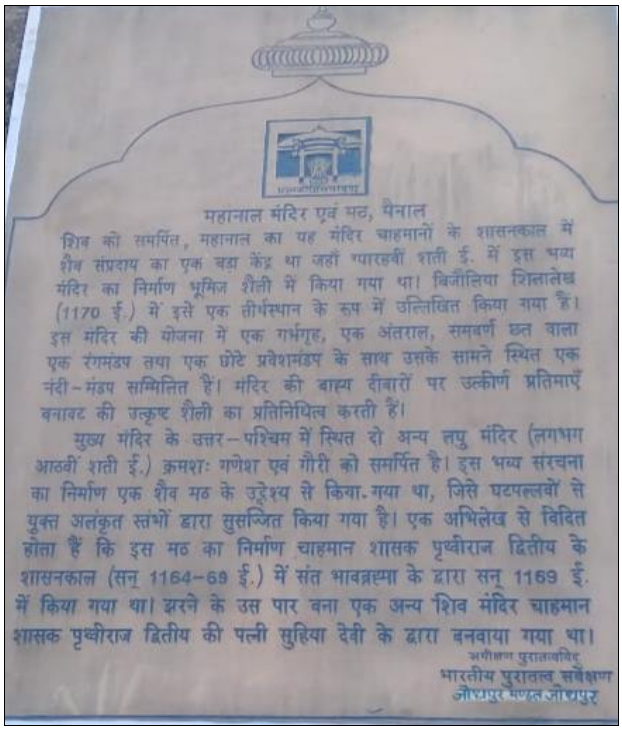

(पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग शिलालेख)

वर्तमान मे यहां पर पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग का एक शिलालेख अंकित है जिसमें मेनाल के मठ निर्माण की जानकारी हैं। चौहान वंशी पृथ्वीराज द्वितीय के शासनकाल (1164–69) में संत भाव ब्रह्मा के द्वारा सन 1169ई. में मेनाल में मठ निर्माण करवाने के बारे में लिखा है। यहां के सुहेश्वर मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज की पत्नी सुहादेवी ने विक्रम संवत 1225 में करवाया था एवं रानी ने पारोली ग्राम के माथुर कायस्थों को इनाम स्वरूप दान दक्षिणा दी थी।[7]

6. मेनाल के नंदी का शिलालेख

मेनाल के महानालेश्वर मंदिर के बाहर वर्गाकार चबूतरे पर विशाल नंदी विराजमान हैं इस नंदी के बाएं पैर पर खंडित रूप में एक पंक्ति का लेख खुदा हैं इस लेख में परशुराम विश्वनाथ जोगी का नाम व तिथि संवत 1553 एवं वेंकट मनोहर का नाम शिल्पकार के रूप में लिखा है।[8]

(नंदी का शिलालेख)

7. चांदखाँ की छत्तरी का शिलालेख

यह छतरी मांडलगढ़ बूंदी मार्ग पर पहाड़ी क्षेत्र में स्थित बांका नामक गांव में है। बांका गांव मेवाड़ रियासत के मांडलगढ़ परगने का सीमांत गांव था यहीं से मेवाड़ की सीमा समाप्त होती थी। यहां पर मांडलगढ़ के हाकिम चांद खां की छत्तरी पर महाराणा जगतसिंह की पत्नि का शिलालेख अंकित हैं। इस लेख में लिखा है कि महारानी ने उक्त छत्तरी के निर्माण हेतु 7501 की धनराशि दान में दी थी एवं छतरी निर्माण में अन्य खर्च के लिए भूमि को इनाम स्वरूप दान पुण्य में दी थी। [9]

8. उण्डेश्वर मंदिर का शिलालेख

यह मंदिर मांड़लगढ़ के किले मे स्थित है । इसके गर्भगृह के स्तम्भ पर लेख अंकित है जिसमे संवत 1450 तिथि एवं शिवालय मण्डप की जानकारी दी गई है। शिलालेख पर चुना पत्थर का लेप करने से पढना मुश्किल है। मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी मे ही हुआ लेकिन जीर्वोध्दार बाद मे मेवाड़ महाराणओ द्वारा किया गया था यह शिलालेख भी उसी समय लिखा गया हो सकता है।

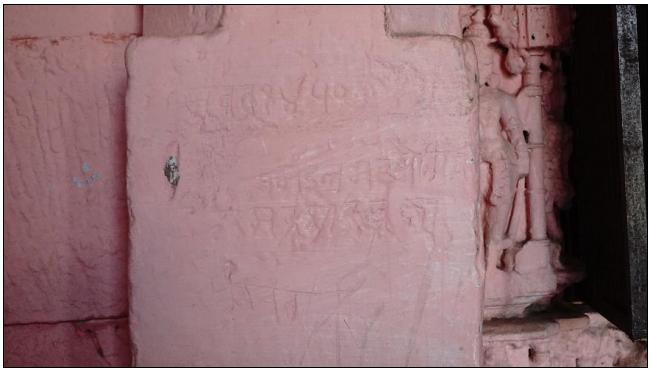

(उण्डेश्वर मंदिर का शिलालेख)

9. खाचरोल का शिलालेख

यह शिलालेख खाचरोल गाँव के बहार की तरफ खंडरनुमा बावड़ी की सीढियों पर लेगा है इसमे सोलंकी राजपुतो के नाम लिखे हुए है। अन्हिलवाड के राजा भीम के वंशजो का राजकीय घराना खाचरोल को बताया है । भीम के वंशज खाचरोल व जावल गाँव में छोटे भोमिया के रूप में निवास करते है लेकिन अपने नाम के साथ ये राजपूत राव की पदवी लगाते है।। खाचरोल में सोलंकियो का किला है जो वर्तमान में केवल टीला शेष है।[10]

10. देवतलाई का शिलालेख

यह शिलालेख कोटडी से 20 किलोमीटर दूर देवतलाई के देवरा में लेगा हुआ है । इस शिलालेख में बगडावत गुजरो का उल्लेख किया गया है । मेवाड़ महाराणा जगतसिंह द्वितीय के द्वारा 1746 ई में देवरा को पुण्यार्थ दान देने व देवरा में विभिन्न धार्मिक कार्यो की जानकारी दी गयी है।

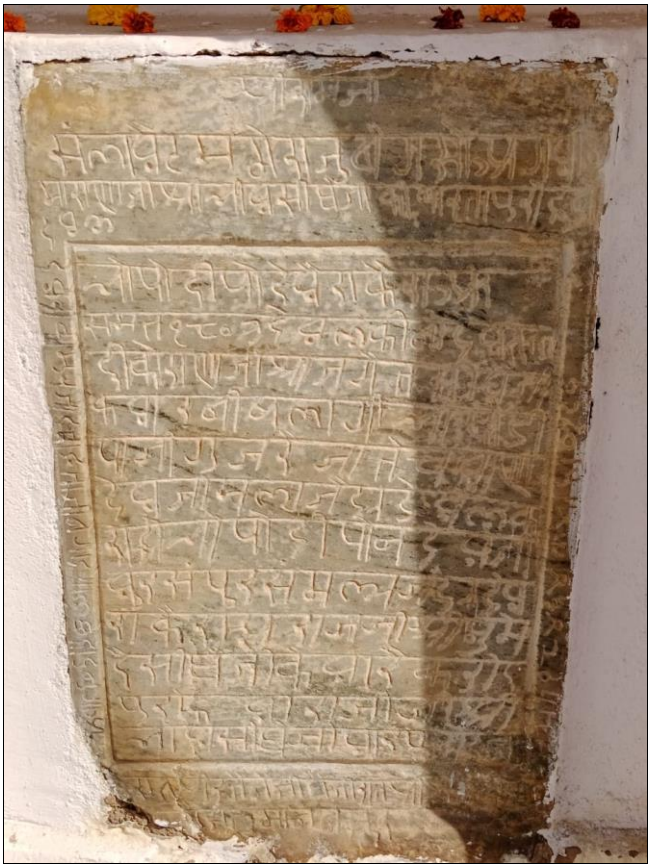

(देवतलाई का शिलालेख)

सन्दर्भ ग्रंथ

1. नंदलाल छिपा, मांडलगढ़ दर्शन, नामदेव पब्लिकेशन मांडलगढ, प्रथम संस्करण 2003ई.पृ. 75
2. शोध पत्रिका, अंक–2, सं. देव कोठारी, लेख नंद माहेश्वरी, मांडलगढ़ दुर्ग के अप्रकाशित लेख, जून 1986ई., साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर
3. श्रीकृष्ण जुगनू, भारतीय ऐतिहासिक प्रशस्ति परंपरा एवं अभिलेख, आर्यव्रत संस्कृती संस्थान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019ई., पृ. 269
4. वही, पृ. 277
5. कर्नल जेम्स टॉड कृत राजस्थान का पुरातत्व एवम इतिहास, अनुवादक ध्रुव भट्टचार्य, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, प्रथम संस्करण 2021ई, पृ.454
6. कर्नल जेम्स टॉड की यात्रा, अनुवादक बलदेव प्रसाद मिश्र, यूनिक ट्रेडर्स जयपुर, प्रथम संस्करण 1988ई पृ.87
7. पुरातत्व विभाग शिलालेख, मेनाल
8. शिल्पी गुप्ता, मेनाल एवं बिजोलिया के मंदिर, नवजीवन पब्लिकेशन, निवाई टोंक, प्रथम संस्करण 2011ई. पृ.137
9. नंदलाल छिपा, मांडलगढ़ दर्शन, नामदेव पब्लिकेशन मांडलगढ, प्रथम संस्करण 2003ई.पृ.97
10. कर्नल जेम्स टॉड कृत राजस्थान का पुरातत्व एवम इतिहास, अनुवादक ध्रुव भट्टचार्य, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, प्रथम संस्करण 2021ई, पृ.455